MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS

1432 बजे

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : सभापति महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि राष्ट्रपति की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए :--

'कि इस सत्र में समवेत् लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति के उस अभिभाण के लिये, जो उन्होंने 23 फरवरी, 2000 को एक साथ समवेत् संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यन्त आभारी हैं। ' "

सभापति महोदया, हमारे संविधान में लिखा है कि प्रतिवर्ा बजट अधिवेशन के प्रथम दिन राष्ट्रपति जी का अभिभाण होता है जिस पर संसद चर्चा करके देश के हालात का लेखा-जोखा करके विचार करती है। देश की उपलब्धियों और कमियों पर चर्चा होती है। सभी पक्षों को सुनने के बाद माननीय प्रधान मंत्री जी देश के लिए दिशा-निर्देश देते हैं। संसदीय प्रणाली की यही एक विशेाता है। परंतु इस बार राष्ट्रपति जी का अभिभाण 23 फरवरी को हुआ। 25 फरवरी से यह प्रस्ताव पेश करने के लिए मैं इंतज़ार कर रहा हूं और आज तीन सप्ताह के बाद जबकि इस सत्र का प्रथम चरण खत्म हो रहा है, आज उसके अंतिम दिन मैं उसको पेश कर रहा हूं।

सभापति महोदया, आज प्रातः जिस सम्य स्टील के बारे में चर्चा हो रही थी, यह प्रोजेक्ट किया जा रहा था कि जैसे सरकार ही जिम्मेदार है। उस सम्य हमारे संसदीय कार्य मंत्री जी ने कहा था कि यह किसके पाप हैं। यह आज ही नहीं हुआ है। जब अटल जी मार्च 1998 में प्रधान मंत्री बने तो प्रधान मंत्री की शपथ लेने के एक सप्ताह बाद ही सत्र हुआ, अभिभाण हुआ, बहस शुरू हुई तो उधर से सभी पार्टियों की तरफ से आवाज़ आई कि वाजपेयी के नेतृत्व में देश बरबाद हो रहा है, तबाह हो रहा है, कुछ नहीं है, गरीबी बढ़ रही है।

(u2/1435/bks-kvj)

आज भी वही हुआ। मैंने बचपन में एक कहानी पढ़ी थी। वह कहानी इस प्रकार थी - एक बाबू जी दफ्तर से घर वापस आये, थके-मांदे थे, इसलिए बैठ गये। उनकी पत्नी चाय बनाने के लिए रसोई में गई। जब आदमी खाली बैठता है तो टेबल पर जो भी कागज होता है, उसे पढ़ना शुरू कर देता है। वह बाबू जी बैठे हुए थे, उन्होंने देखा कुछ कागज पड़े हैं, उनमें स्कूल की रिपोर्ट बुक भी थी। उन्होंने उसमें देखा कि अंग्रेजी विाय में सौ में से जीरो नम्बर, हिन्दी में सौ में से आठ नम्बर, अर्थमैटिक में सौ में से 10 नम्बर, सभी सब्जैक्ट में फेल, उस पर लाल स्याही से लाल निशान लगा हुआ था वैरी पूअर परफार्मेन्स। उनका बेटा गली में खेल रहा था। उसने सुना पिता जी आये हैं तो भागकर पिता जी के पास आया और आकर उनकी गोद में बैठ गया। बाबू जी ने तीन-चार चांटे लगाये और बोले बड़ा बदमाश है, नालायक है, गधा है, पढ़ता नहीं है, सारा दिन खेलता रहता है। बेटा हक्का-बक्का हो गया। सोचा कि मैं तो प्यार प्राप्त करने आया हूं और पिता जी ने आते ही तीन-चार चांटे लगा दिये हैं, बेचारा रोने लगा। जब पत्नी ने रसोईघर में आवाज सुनी तो वह भागकर आई और पति से पूछा कि यह तो आपका प्यार प्राप्त करने के लिए आया था, आपने आते ही इसे चांटे मार दिये, इसका कसूर क्या था। पति बोले कसूर पूछती हो, देखती नहीं हो, सब सब्जैक्ट्स में फेल हैं। किसी मे जीरो, आठ, दस 12 नम्बर हैं। जब पति महोदय बोल रहे थे तो पत्नी मुस्करा रही थी, जब वह बोल चुके तो पत्नी ने कहा - हुजूर इसे ध्यान से पढ़िये, आज जब मैं ट्रंक साफ कर रही थी तो मुझे यह पुरानी स्कूल रिपोर्ट बुक मिली और इस पर आपका नाम लिखा हुआ है। यह आपकी रिपोर्ट है। इसलिए हम अपने मित्रों से कहते हैं कि आज जो देश की हालत है, जिसका मैं अभी वर्णन करूंगा, यह किसकी रिपोर्ट है।

सभापति महोदय, हमें 1947 में आजादी मिली और सैकिंड वर्ल्ड वार 1945 में खत्म हुआ। उस लड़ाई में जापान, जर्मनी, इटली हार गये। जापान बिल्कुल तबाह हो गया, बरबाद हो गया। जापान पर एटम बम गिराये गये तथा दूसरे तरह के इतने अधिक बम गिराये गये कि जापान की एक एकड़ भूमि भी समतल नहीं रही। वह बिल्कुल बरबाद हो गया, पार्लियामेंट, इंडस्ट्रीज आदि सब खत्म हो गये। मेरा कहना यह है कि जापान ने अपनी उन्नति की यात्रा 1945 में जीरो से शुरू की। 1947 में हम आजाद हुए। लेकिन हमने अपनी यात्रा जीरो से शुरू नहीं की। हमारे देश के बारे में यह कहा जाता है - India is a rich country inhabited by the poor. भारत एक धनी देश है पर इसके रहने वाले गरीब है। यह सवाल हम इकोनोमिक्स में सोल्व किया करते थे।â€¦(व्यवधान)

श्री श्यामाचरण शुक्ल (महासमुन्द) : जापान को अमरीका ने कितनी ज्यादा मदद दी थी, जिसके कारण वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ।

सभापति महोदय : अभी उन्हें बोलने दीजिए, आप बाद में इसका रिप्लाई कीजिए।

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : आपने चार लाख करोड़ रुपये की सहायता ली है। सभापति महोदया, मैं कह रहा था कि जापान ने जीरो से शुरू किया था और आज आर्थिक दृटि से वह दुनिया में तीसरे नम्बर पर है और हमारा देश जिसमें प्राकृतिक साधन आदि सब कुछ थे। हमारे पास भूमि बड़ी उपजाऊ थी। हमारे पास नदियों का एक जाल बिछा हुआ था, पहाड़ थे, हमारे पास लोहा, कोयला आदि की सब तरह की खाने थीं। लेकिन आज हम दुनिया में 136वें नम्बर पर हैं। जापान के लोगों ने राट्रीयता के साथ काम किया। इस देश को मैंने बनाना है, यह भावना लोगों में भरी गई, वह है कारण। कर्जा कारण नहीं है। जितना कर्जा हमने लिया है, उतना कर्जा उसने नहीं लिया होगा।

श्री श्यामाचरण शुक्ल (महासमुन्द) : हम दो सौ वर्ा तक गुलाम थे, लेकिन जापान कभी गुलाम नहीं था।

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : आप बाद में बोलियेगा। क्या आप इसे ठीक मानते हैं कि हिंदुस्तान मैं ठीक प्रोग्रेस हुई है, क्या आप इससे संतुट हैं।

सभापति महोदय : आप चेयर को एड्रेस कीजिए, उन्हें क्यों एड्रेस करते हैं।

SHRI AJOY CHAKRABORTY (BASIRHAT): You are accusing the Congress, but you are also following the same path.

MR. CHAIRMAN: Please sit down.

SHRI MANOJ SINHA (GAZIPUR): The same is being done in West Bengal. ...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Please do not disturb him. Let him move the motion. You will also have a chance.

(w2.h/1440/rpm/brv)

स्भापति महोद्या, इस देश की यह हालत हो गई है कि ज्ब इस देश में गर्मी प्ड़ती है, तो हमको सुनाई देता है कि लोग गर्मी की वजह से मर गए। ज्ब सर्दी प्ड़ती है, तो हमें अख्बारों में समाचार पढ़ने को मिलता है कि लोग सर्दी से मर गए। ज्ब ब्र्सात होती है, तो हमें सुनाई प्ड़ता है कि लोग व्ा्या बाढ़ से मर गए। यह अजीब देश है जहां लोग, गर्मी, सर्दी और व्ा्या से मर जाते हैं। देश की स्थिति यह है कि यहां जो 34 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे रहते हैं, उनको पहनने के लिए हम कप्ड़ा नहीं दे पाए, सिर ढकने के लिए झोंप्ड़ी नहीं दे पाए। जो पानी हमारे नदी नालों में बहता है, उनका मुंह हम अपने खेतों की तरफ नहीं मो्ड़ पाए और जिस्से खेतों की सिंचाई हो पाती। आज उनका पानी समुद्र में जाकर बेकार हो रहा है।

स्भापति महोद्या, इस देश में पिछले सालों में जो अन्य दलों की सरकारें रहीं, उनमें मुख्य रूप से कांग्रेस की ही सरकार ज्यादा रही। मैं ज्यादा नहीं सिर्फ दो उदाहरण दूंगा-एक तो हमारा कि्सान कितनी मेहनत करके अनाज पैदा करता है और उसका हम सदुप्योग नहीं कर पाते। आज बहुत से प्रदेश ऐसे हैं जहां कालाहांडी जैसे क्षेत्र में एक बोरी अनाज के लिए लोग अपने बच्चों को बेच देते हैं। यह त्स्वीर हमारे सामने आई है। देश के अनाज को एफ.सी.आई. हैंडल करती है, खरीद-फरोख्त करती है और पूरे देश में पहुंचाने का काम करती है उसके बारे में सी.ए.जी. ने 1997 में अपनी रिपोर्ट में कहा है कि एफ.सी.आई. ने कागजों में जितना अनाज दिखाया है वास्त्व उतना अनाज गोदामों में नहीं है। इसकी जरा जांच करा लीजिए। सरकार ने कहा कि आप जांच करें, तो सी.ए.जी. ने कहा कि हम इसकी जांच नहीं कर सकते। भारत सरकार ने विदेशी एजेंसी को भारत के अंदर कार्यरत् संस्था भारतीय खाद्य निगम के गोदामों की जांच करने का कार्य सौंपा जिसका नाम एस.जी.एस.है। उस्से जांच कराई और इस कार्य के लिए उस एजेंसी को 11 करो्ड़ रुपए दिए गए। यानी एक विदेशी कंपनी को कहा कि आप हमारे देश में आइए और हमारे एफ.सी.आई. के गोदामों के अंदर कितना अनाज कम है उसकी जांच करके बताइए। मुझे मालूम प्ड़ा है कि उस कंपनी ने भी अपनी जांच में 4.7 लाख टन अनाज कम पाया। यदि आठ रुपए प्रति किलो ग्राम की दर से कीमत लगाएं तो 375 करो्ड़ रुपए का अनाज कम पाया गया।

स्भापति महोद्य, प्रश्न यह है कि इतनी ब्ड़ी मात्रा में अनाज कहां चला गया, एफ.सी.आई. का कहना है कि जांच कैसे हुई। अभी हमारे खाद्य मंत्री ने दिल्ली के निकट गोदामों पर छापे मारे और पाया कि 21 हजार टन चावल बद्बूदार और खराब पाया गया। वह खाने लायक नहीं है। यह सब महोद्या मैं इसलिए बता रहा हूं कि कि्सान जिस अनाज को इतनी मेहनत से पैदा करता है, उस अनाज का रख-रखाव ठीक प्रकार से न हो पाने और ठीक प्रकार से उप्भोक्ता तक नहीं पहुंच पाने के कारण न्ट होता है और उप्भोक्ता भूख से मर रहा है। यह देश की अव्स्था पिछले 50 साल के कांग्रेस कुशासन के कारण चली आ रही है।

1444 बजे (श्री पी.एच. पांड्यिन पीठासीन हुए)

स्भापति महोद्य, देश के एफ.सी.आई. की कितनी दुराव्स्था है वह मैं आपको बताना चाहता हूं कि 1994 में 400 करो्ड़ रुपए का धान लगभग 400-500 मिलों को दिया कि उस्से चावल निकाल कर प्रो्सैस करिए, लेकिन आज तक उन मिलों ने एक किलो पैडी भी चावल बनकर एफ.सी.आई.को वाप्स नहीं कि्या है। महोद्य, मेरी आपके माध्यम से डिमांड है कि इसकी सी.बी.आई. से जांच कराई जाए।

स्भापति महोद्य, यह सब मैं इसलिए कह रहा हूं कि जिस अनाज को कि्सान इतनी मेहनत से पैदा करता है, जिसे उप्भोक्ता के पास जाना चाहीए, जो गरीब के पास पहुंचना चाहिए, रख-रखाव के अभाव में या चोरी चले जाने के कारण उप्भोक्ता के पास नहीं पहुंच पाता है, यह स्थिति कांग्रेस के कुशासन के कारण हो गई है। अभी शुक्ल जी कह रहे थे कि बहुत लोन मिला है। मैं बताना चाहता हूं कि इस देश ने पिछले 50 साल में 4 लाख करो्ड़ रुपए का विदेशी लोन लिया है और देशी लोन अलग है।

(x2/1445/rjs-spr)

भारत विदेशों से लिये गये कर्ज पर जो ब्याज देता है, वह 90 हजार करो्ड़ रुप्ये है। पिछले ऋण की कि्श्तों की वाप्सी हर साल 1 लाख सात हजार करो्ड़ रुप्ये है अर्थात् प्रतिर्वा ऋण और कि्श्तों को मिलाकर 1 लाख 97 हजार करो्ड़ रुप्ये दिया जाता है। यह रुप्या हर साल कि्श्तों के रूप में दिया जाता है। देश की कुल आय जो हम टैक्सों से वसूल करते हैं, वह 1 लाख 82 हजार करो्ड़ रुप्ये है और जो हम ब्याज देते हैं, कि्श्ते देते हैं, वह 1 लाख 97 हजार करो्ड़ रुप्ये है। आज हमारे जो नॉन परफोर्मिंग ऐसेट्स हैं, मार्च 1997 में बैंक के बट्टे-खाते में जो राशि दिखाई गई है, वह 91 हजार करो्ड़ रुप्ये है तथा अन्य दूसरी वित्तीय स्ंस्थाओं में 27 हजार करो्ड़ रुप्ये है। कुल मिलाकर 78 हजार करो्ड़ रुप्ये हम बट्टे-खाते में डाल चुके हैं जिसकी वाप्सी नहीं होनी है। यह आज देश की स्थिति है। 1991-92 में नॉन प्लान एक्सपेंडीचर 80 हजार करो्ड़ रुप्ये से बढ़कर 2 लाख 6 हजार 882 करो्ड़ रुप्ये हो गया। मैं आपको बता रहा था कि यह देश की त्स्वीर है। पिछले 50 सालों के शासन के दुपरिणामों को हमको आज भुगतना प्ड़ रहा है। जैसे मूलभूत प्राथमिकताओं की उपेक्षा हुई। उदाहरणार्थ लोगों की गरीबी बढ़ी और सभी नागरिकों के लिए पेयजल, बुनि्यादी शिक्षा तथा स्वास्थ्य की देख्भाल नहीं हो पाई। अनिवार्य अपरिहार्य गलतियां की गईं। 50 व्ा पुरानी कश्मीर समस्या, उत्तर पूर्व में तथा देश के अन्य भागों में उग्रवाद की समस्या गंभीर बन गई है। अर्थव्यव्स्था में कुप्रबंध छाया रहा। बाह्य और आंतरिक ऋण का अम्बार रहा जिसके कारण केन्द्र के स्ंसाधनों पर बुरी तरह से दबाव प्ड़ा। इस्से भी बढ़कर विभिन्न स्तरों में कुशासन चलता रहा जिसके कारण नीतियों, कार्यक्रम के निर्माण और उसे लागू करने में बार-बार समस्यायें उत्पन्न हुईं। भ्रटाचार और नौकरशाही के कारण ये समस्यायें उत्पन्न होती रहीं और लोगों का भ्रम टूट गया। स्वतंत्रता के इतने व्ाों के बाद भी देश की आधी जनसंख्या विकास के लाभों से वंचित रह गई, यह दुख की बात है। आज जब भारत नई सदी में प्रवेश कर रहा है तब 35 फी्सदी से अधिक लोग गरीबी रेखा के नीचे रह रहे हैं, लगभग 50 फी्सदी लोग अनपढ़ हैं, 40 फी्सदी लोगों को स्वच्छ पेयजल भी उपलब्ध नहीं है। 70 फी्सदी लोगों को स्वच्छता की सुविधायें उपलब्ध नहीं कराई जा सकीं। बुनि्यादी ढांचे के विकास â€¦(व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खुजराहो) : खुराना जी, क्या आप कोटेशन पढ़ रहे हैं?

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : मैं कोटेशन पढ़ रहा हूं। जहां हमारे मेहनती कि्सानों के रिकार्ड बने, जैसा मैंने अभी कहा कि रिकार्ड तो्ड़ उत्पादन कि्या, वहीं खेती, सिंचाई, कृषि, उद्योगों, कारीगर और शिल्पकारों के प्रति असीम उपेक्षा के कारण आज ग्रामीण भारत पिछड़ेपन की गर्त में चला गया। आज सामाजिक और बुनि्यादी ढांचा, कृषि तथा सिंचाई के विकास के लिए विशाल स्ंसाधनों की आव्श्यकता है। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में भारत की कम उपलब्धियां और भी प्रकट रूप से दिखाई प्ड़ती हैं। हमारी राजनीतिक स्ंस्कृति पिछले 50 व्ाों के अंदर प्रदूषित हुई है। 1947 से पहले राजनीति त्याग और तपस्या का चिह्न होती थी। जो लोग आजादी चाहते थे, उनके घर नीलाम होते थे, जो लोग फांसी के फंदे को चूमते थे, जेलों में जाते थे, वे अपना सब घरबार तबाह करते थे। अगर मैं यह कहूं कि आजादी से पहले उन दीवानों ने जो कहा था :-

कबीरा खड़ा बाजार में, लकुटी थामे हाथ

जो घर फूके अपना, चले हमारे साथ।

यह नारा होता था क्योंकि उस समय आजादी लेना लक्ष्य होता था। आजादी की लड़ाई में शामिल होना, राजनीति में आना एक तपस्या मानी जाती थी, त्याग माना जाता था। 1947 तक यह रहा। 1947 के बाद सत्ता के दलाल, सत्ता के गलियारे में आये। उसके बाद सत्ता और राजनीति का व्यापारीकरण शुरू हो गया।

(y2/1450/nsh-ksp)

उसके बाद अपराधीकरण शुरु हो गया। बाद में उन अपराधियों ने सोचा कि नेता लोग हमारे कंधों पर आते हैं तो हम ही नेता क्यों न बन जाएं। अब जेलों में रहने वाले अपराधियों को टिकट मिलने शुरु हो गए। इस तरह से इस देश में राजनीति को प्रदूषित किया गया। इसका परिणाम यह है कि 1947 से पहले जो राजनीति पवित्र मानी जाती थी, आज राजनीति में हम शामिल हैं, यह कहते हुए हमें लज्जा आती है क्योंकि आज राजनीति समाज की दृष्टि से इतनी प्रदूषित हो गई है। प्रशासन की इस दुखद गाथा का सीधा प्रभाव यह पड़ा है कि राजनैतिक आचरण का स्तर धीरे-धीरे गिरता चला गया। हमें अपने देश के संविधान पर गर्व है। हमें इस बात का गर्व है कि हम लोकतंत्र को ऐसे समय में हर तरफ से बचाने में सफल रहे हैं। आज अनेक राजनेताओं के लिए राजनीति राष्ट्र की सेवा का माध्यम नहीं रह गया है। उनके लिए शासन लोगों की सेवा की जिम्मदारी नहीं है। भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, गुटबंदी, कलह और राजनैतिक पार्टियों के बीच असहयोग जैसी बुराइयों के फलस्वरूप पूरा राजनैतिक वातावरण दूषित हो चला है। यह आवश्यक है कि सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने वाले लोग बहुत अच्छे हों। जिस प्रकार के उत्तरदायित्व का उन्हें निर्वाह करना होता है, उसी के अनुरूप उनमें नैतिकता का ऊंचा स्तर होना चाहिए। ऐसा नहीं है इसलिए राजनीति और राजनीतिज्ञों में लोगों का विश्वास गिरता जा रहा है। भारत जैसे लोकतंत्रीय देश के लिए यह शुभ लक्षण नहीं है।

हमारी सरकार जिसे मैं 13 या 15 महीने की भी उपलब्धियां मानता हूं, भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में चल रही एन.डी.ए. की सरकार की अनेक गौरवपूर्ण उपलब्धियां हैं। जहां मई 1998 में भारत को परमाणू शक्ति बनाने के लिए साहसपूर्ण और ऐतिहासिक निर्णय लेने से भारतीयों में आत्मविश्वास की नई भावना पैदा हुई, वहां जून, जुलाई में कारगिल में पाकिस्तानी हमले का मुंह तोड़ जवाब देकर प्राप्त विजय ने देश में जबरदस्त देश प्रेम की भावना को जगाया है। हमारे खिलाफ किए गए हर प्रकार के दूषित प्रचारों को नकारते हुए हमारी सरकार ने साम्प्रदायिक शांति का रिकार्ड तैयार किया। केन्द्र-राज्य संबंधों में फिर से सामन्जस्य बहाल किया गया। हमारी सरकार ने अनेक साहसिक और सुगम व्यापक प्रबंध करके अर्थव्यवस्था में पुन: प्राण फूंके। विशेष उल्लेखनीय है सत्ता में रहते हुए, मैं आज फक्र के साथ कह सकता हूं कि हमारी सरकार के 19 महीने के शासन में हिन्दुस्तान में कोई माई का लाल नहीं है जो सफेद चादर पर सुई के बराबर भी काला दाग बता सके। घोटालामुक्त यह सरकार पिछले 19 महीनों से चल रही है। विदेश नीति में यह सरकार पाकिस्तान को छोड़कर विश्व के सभी देशों के साथ भारत के संबंधों में सुधार लाने में सफल हुई। पिछले दशकों में कभी ऐसा नहीं रहा जब भारत को विश्व में इतना अधिक सम्मान मिला हो जितना उसे आज मिला। ...(व्यवधान)

SHRI SATYAVRAT CHATURVEDI (KHAJURAHO): Mr. Chairman, Sir, Shri Madan Lal Khurana is a very senior Member of this House. With all due respect to him, I would like to point out that he is almost reading his speech, which is not the convention. He has every right to quote from the President's Address, but he cannot read his speech.

MR. CHAIRMAN (SHRI P.H. PANDIYAN): He may be refreshing his memory.

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : मुझे मालूम है। मैं कुछ कोट कर रहा हूं। ...(व्यवधान) आप अपने लीडर से पूछिए। आपकी लीडर कैसे बोलती हैं, जरा मुझे बताइए।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजराहो) : जैसे बोलना चाहिए, वैसे बोलती हैं।

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : वे लिखकर बोलती हैं।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : हां, यह जायज है कि लिखकर बोलती हैं। ...(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना (दक्षिण दिल्ली) : मैं तो बोल रहा हूं लेकिन वे लिखकर पढ़ती हैं। ...(व्यवधान)

SHRI V.P. SINGH BADNORE (BHILWARA): Mr. Chairman, Sir, Shri Madan Lal Khurana has been in Parliament for much longer period than our friend, Shri Satyavrat Chaturvedi.

SHRI SATYAVRAT CHATURVEDI (KHAJURAHO): I know that and that is why I am telling that he should not read his speech.

SHRI V.P. SINGH BADNORE (BHILWARA): Sir, he is trying to teach rules to somebody who is well aware of them.

SHRI SATYAVRAT CHATURVEDI (KHAJURAHO): I have no objection to his referring to the President's Address.

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : मैं कह रहा था कि पिछले 8-9 महीने के अंदर मुद्रास्फीति की दर 2 प्रतिशत के आस-पास रही है जिसमें कारगिल की लड़ाई भी शामिल है। आम तौर से जब लड़ाई होती है तो कीमतें बढ़ती हैं। लेकिन इस सरकार ने कारगिल की लड़ाई के बावजूद मुद्रा स्फीति की दर 2 प्रतिशत के आस-पास रखी है।

(z2/1455/mkg-ss)

यह कोई कम उपलब्धि नहीं है। शेयर मार्केट किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का मिरर होता है। देश की अर्थव्यवस्था बूस्ट हो रही है या नीचे जा रही है, उससे इसका पता चलता है। जब हम सत्ता में आये थे, यह सरकार आई थी तो मुम्बई का सेंसेक्स 3000 के आसपास था। आज वह 5000 से ऊपर है। कुछ दिन पहले यह 6000 के आसपास पहुंच गया था। यह दिखाता है कि देश की अर्थव्यवस्था और देश का भविय कितना उज्ज्वल है। अब आप कहेंगे कि मैं इसको भी पढ़ रहा हूं। अब हमारे देश का विदेशी मुद्रा का भंडार 32 बिलियन डालर से अधिक हो गया है, जो एक रिकार्ड है।

मैं दो योजनाओं का जिक्र करूंगा, योजनाएंतो बहुत सी हैं। ये बड़े किसानों की बातें करते हैं। नेशनल एग्रीकल्चर इन्श्योरेंस स्कीम लागू की गई है। बाकी सब चीजों

का इन्श्योरेंस तो हुआ करता था, किसी दुकान में आग लग जाये, किसी फैक्टरी में चोरी हो जाये, कुछ हो जाये तो उसको इन्श्योरेंस मिलता था, लेकिन किसान को बाढ़ से, सूखे से बर्बादी होती थी तो उसको इन्श्योरेंस नहीं मिलता था। पहली बार इस सरकार ने सारे देश में नेशनल एग्रीकल्चर इन्श्योरेंस स्कीमâ€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : आपको फसल बीमा बुझाता है क्या ? सरकार ही कह रही है कि अभी यह लागू नहीं हुई है। â€¦(व्यवधान) फसल बीमा योजना पहले से लागू है। व्यापक फसल बीमा योजना लागू करनी थी। इसमें सरकार ही कबूल कर रही है कि अभी यह लागू नहीं हुई है।

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : मैं दूसरी बात कहना चाहता हूं। दूसरी योजना किसान क्रेडिट कार्ड की है। हम जानते हैं कि आज देश का इण्डस्ट्रियलिस्ट कहीं जाता है, कोई परचेजिंग करता है तो उसके पास क्रेडिट कार्ड होता है। मैं अर्थशास्त्र का विद्यार्थी रहा हूं, हम लोग पढ़ा करते थे कि इस देश का किसान कर्ज में ही पैदा होताहै, कर्ज में ही जिंदा रहता है और कर्ज में ही मर जाता है। प्राइवेट साहूकार उससे ज्यादा इंटरैस्ट लेते हैं, इसलिए वह सारी उम्र कर्ज ही देता रहता है। बैंकों में कर्जा लेने जाये तो वे रिश्वत मांगते हैं। पहली बार यह स्कीम इस देश में लागू की गई है कि किसान क्रेडिट कार्ड किसान की जितनी जमीन होगी, उसके अनुसार उसको दे दिया जायेगा।

श्री कांतिलाल भूरिया (झाबुआ) : अब सारे ठेकेदार सरकार के साथ हो गये न।

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : आप उनको ठेकेदार कहें तो ठीक है। आप पहले दलाल थे, अब ठेकेदार हो गये।â€¦(व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : खुराना जी, उसकी जमीन पर बहुत सारा कर्जा हो, तब भी क्या आप **श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) :** यह डिटेल की बात है। अभी यह स्कीम शुरू हुई है। जब इस पर बहस होगी, तब आप प्रश्न करिये। मैं यह कहना चाहता हूं कि किसान क्रेडिट कार्ड योजना शुरू हुई और मुझे कहते हुए खुशी हो रही है कि 50 लाख से अधिक कार्ड तथा कार्ड पासबुक जारी हो चुके हैं और हमारा विश्वास है कि 31 मार्च, 2000 तक 75 लाख कार्ड इश्यू हो जाएंगे। हमने यह एक अच्छी योजना प्रारम्भ की है, जो 50 सालों में शुरू नहीं हुई। मैं और भी चीजें बताऊंगा। इनको तो लगता है कि कुछ हुआ ही नहीं। मेरा कहना है :

जिसको खुदा ने दी हैं आंखें, वे तो पत्थर में भी खुदा देखते हैं,

जिनकी आंखें ही पत्थर की हैं, वे क्या खाक देखते हैं।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : यही तो हम आपको समझा रहे हैं कि पिछले 50 सालों का आपको दिखाई नहीं दे रहा है।â€¦(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरिया (झाबुआ) : आप तो चाहते हैं, मगर सरकार नहीं चाहती है।â€¦(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : मैंने बता दिया कि पिछले 50 सालों में आपने क्या किया है।

मैं दो-तीन इश्यू उठाना चाहता हूं। जैसा आप कह रहे हैं कि कांस्टीट्यूशन रिव्यू कमीशन की बड़ी चर्चा हो रही है। यह सरकार बहुत खराब कर रही है, बुरा कर रही है, भगवाकरण करेगी, यह करेगी। मैं कहना चाहता हूं, हमारे प्रधान मंत्री जी बार-बार कह चुके हैं कि यह जो कांस्टीट्यूशन का रिव्यू होगा, इसमें बेसिक चेंजिज नहीं होंगे। हम बार-बार कह चुकेहैं कि इसकी समीक्षा में बेसिक चेंजिज नहीं होंगे।

(a3/1500/jr-mmn)

आप हमारे ऊपर आरोप लगा रहे हैं, जबकि आपने स्वयं 1975 के अंदर एक रिव्यू कमेटी सरदार स्वर्ण सिंह की अध्यक्षता में बनाई थी। हमने तो संविधान समीक्षा आयोग के अध्यक्ष पूर्व चीफ जस्टिस को बनाया है। उसमें किसी राजनीतिक दल को प्रतिनिधित्व नहीं दिया है। आपने रिव्यू करते समय सिर्फ कांग्रेस के सांसदों, विधायकों और प्रधानों से पूछकर रिपोर्ट पेश कर दी। रिपोर्ट आने के बाद संविधान में परिवर्तन हुआ, न अपील, न दलील और न वकील। यह काम आपने उस समय इमर्जेंसी में किया था। जबकि हमारा कहना है कि संविधान के बुनियादी ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं करेंगे। सब कुछ आम राय से होगा। हम जानते हैं संसद की रचना क्या है। बिना कांग्रेस और विरोधी दलों के सहयोग से हम परिवर्तन नहीं कर सकते। हमारे पास दो तिहाई बहुमत नहीं है। संविधान में परिवर्तन के लिए आपकी राय ली जाएगी, आपकी सहमति से होगा, फिर हल्ला करने की और हौवा खड़ा करने की जरूरत क्या है।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : जब संविधान में परिवर्तन करने का प्रोविजन है तो उसके लिए आयोग बनाने की जरूरत क्या है, आप यहां लाएं।

श्री मदन लाल खुराना (दक्षिण दिल्ली) : आपने 1975 में क्यों बनाया था। आप बनाएं तो ठीक है और हम बनाएं तो गलत है। आपने तो उसका अध्यक्ष सरदार स्वर्ण सिंह जी को बनाया था। लेकिन हम उसमें विशेज्ञों को ले रहे हैं। पिछले 50 सालों से जो कठिनाइयां आ रही हैं, वे उस पर विचार करेंगे। कुछ पाइंट तो आपके चुनाव घोाणा पत्र में भी थे कि समाज की संरचना क्या होगी। केन्द्र और राज्यों के बीच क्या सम्बन्ध होने चाहिए, उसके बारे में चर्चा हो या न हो, रिव्यू हो या न हो, आर्टिकल 356 का दुरुप्योग जिस तरह से किया गया है उस पर पुनर्विचार किया जाए या नहीं...

श्री हन्नान मोल्लाह (उलूबेरिया) : यह सरकारिया आयोग की रिपोर्ट में है।

श्री मदन लाल खुराना (दक्षिण दिल्ली) : मालूम है। दल-बदल कानून पर पुनर्विचार करना आवश्यक है या नहीं, नेशनल ज्यूडिशरी कमीशन के बारे में विचार करना आवश्यक है या नही, सरकारिया आयोग की सिफारिशों को लागू करने पर विचार करना है या नहीं। इन सब चीजों पर संविधान समीक्षा आयोग में विचार किया जाना है। हम इन मुद्दों पर जनता की राय लेना चाहते हैं। हमारे पास कोई मशीन नहीं है कि एकदम से इन चीजों पर सब कुछ निर्णय हो जाए। लेकिन यह सब आपकी सहमति के बिना नहीं होगा। इसलिए जनता के सामने हल्ला करने की कोशिश क्यों कर रहे हैं।

मैं कुछ बातें कारगिल युद्ध के बारे में कहना चाहता हूं। उस समय कांग्रेस पार्टी का जो रवैया रहा, उन्होंने सोचा था कि चुनावों में हमें इसका फायदा मिल जाएगा, उसका परिणाम उन्हें भुगतना पड़ा है। इसके पहले भी युद्ध हुए हैं। 1947 में पहला युद्ध पाकिस्तान के साथ हुआ, उसने हमारे देश पर हमला किया। जब हमारी फौजें आगे बढ़ रही थीं, उस समय प्रथम प्रधान मंत्री जी ने सीज़फायर करके हमारी आगे बढ़ती हुई सेना के पैरों में जंजीर डाल दी। उसका नतीजा यह हुआ कि आज भी हमारे देश के कश्मीर भाग का एक तिहाई हिस्सा पाकिस्तान के पास है। अगर सीज़फायर नहीं हुआ होता तो वह हिस्सा हमारे कश्मीर का हिस्सा होकर हमारे पास होता, यह उस समय के सेना के अधिकारियों का कथन है। दूसरी लड़ाई चीन के साथ 1961 में हुई। उस वक्त से आज तक हमारे देश का 38,000 वर्ग किलोमीटर का हिस्सा चीन के पास है। उसको आप इतने सालों तक शासन में रहते हुए भी वापस नहीं ले पाए। 1965 के अंदर तीसरा युद्ध हुआ। हमने कश्मीर की चोटियों को अपने कब्जे में ले लिया। हमारे स्वयं के प्रधान मंत्री श्री शास्त्री ने ताशकंद जाकर एक गलत समझौता किया। वहीं पर उनका स्वर्गवास हो गया।

(b3/1505/asa/tkd)

1971 में ल्ड़ाई हुई। जनरल अरोड़ा के नेतृत्व में 95000 पाकि्स्तानी फौजि्यों को गिरफ्तार कि्या ग्या।...(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरि्या (झाबुआ) : वह कांग्रेस ने कि्या।...(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : आपकी सेना ने कि्या, मैं यही कह रहा हूं। मुझे अपनी बात कहने दीजिए।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN (SHRI P.H. PANDIYAN): I would like to apprise the Member that we cannot impute motives against the dead person. Shri Lal Bahadur Shastri is no more. He will not be able to answer. Let there not be any reference to a late Prime Minister who is dead.

श्री कांतिलाल भूरि्या (झाबुआ) : कारगिल की ल्ड़ाई में जवान मारे ग्ये। एक लाख पाकि्स्तानी सैनिकों को कांग्रेस की सरकार ने गिरफ्तार कि्या था।...(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष जी, मेरा यही कहना है। 1971 की ल्ड़ाई में 95,000 prisoners of Pakistan were arrested by India जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के नेतृत्व में यह ल्ड़ाई ल्ड़ी गई लेकिन शिमला में जाकर जिन 95000 पाकि्स्तानी सैनिकों को गिरफ्तार कि्या ग्या था, उनके बदले में हम कश्मीर का फैसला कर सकते थे लेकिन वह फैसला नहीं कि्या। सेना ने जब जब ल्ड़ाई युद्ध में जीती, हमारे राजनेता समझौते की टेबल पर उस ल्ड़ाई को हार ग्ये।...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी (रायगंज) : अगर शिमला समझौते से आपकी अभी तक कोई नाराजगी हो और यदि हिम्मत है तो सदन में कह दीजिए कि We are opposed to Shimla Samjhota मैं आपको सलाम करूंगा लेकिन लाहौर में जाकर अटल बिहारी वाजपेयी जी ने खुद कहा कि आपके साथ हमारी बातचीत का जो फॉर्मेट होगा, वह शिमला समझौते के तहत होगा, उसको जरा याद रखें।

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : मैंने यह कहा है कि शिमला समझौते में अगर यह शर्त रखी जाती कि उन 95 हजार पाकि्स्तानी सैनिकों के बदले में एक तिहाई कश्मीर को लि्या जा सकता था। मैं शिमला समझौता की बात नहीं कर रहा हूं। जब हम 95000 पाकि्स्तानी सैनिकों को रिहा कर रहे थे तो एक तिहाई कश्मीर से पहले समझौता करो, यह कह सकते थे। जब जब सेना ने युद्ध के मैदान में ल्ड़ाई जीती, हमारे राजनेता उस ल्ड़ाई को समझौते में, टेबल पर हार ग्ये...(व्यवधान) डैमोक्रेसी के अंदर भी अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में हमने उस ल्ड़ाई को जीता।...(व्यवधान) यह पहला मौका है, मैं यह कह रहा हूं। सभी देशों ने उस ल्ड़ाई में हमारा साथ दि्या, हमारा समर्थन कि्या, हमारी निंदा नहीं की।

जि्स बस यात्रा की यह बात कर रहे हैं, दुनि्या ने देखा कि शांति का संदेश लेकर अटल बिहारी वाजपेयी जी लाहौर ग्ये लेकिन पाकि्स्तान ने पीठ में छुरा घौंपा। दुनि्या की दृटि में यह आ्या कि हिन्दुस्तान तो शांति चाहता है और पाकि्स्तान जो है...(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरि्या (झाबुआ) : जि्स समय घुसपैठि्ये आ रहे थे, सरकार को तो जानकारी भी नहीं थी और वह वहां जाकर न्वाज शरीफ से गले मिल रहे थे और वे सारे घुसपैठिए अंदर आ ग्ये।...(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : आपको चुना्व में इसका परिणाम भुगतना प्ड़ा है। जि्स समय यहां युद्ध हो रहा था...(व्यवधान)उस समय आपने मांग की थी कि यह यहां कैसे आए हैं, इसकी जांच कर्वाई जाए। तो उस समय हम सेना को ल्ड़ने के लिए कहते या यह कहते कि आप रुकि्ये पहले हम कांग्रेस के कहने पर जांच कर्वा लें कि घुसपैठिए यहां कैसे आए ?...(व्यवधान)

श्री कांतिलाल भूरि्या (झाबुआ) : उस समय नहीं कहा था जांच कर्वाने के लिए।...(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : तुम्हारे इन्हीं ब्यानों से तुम हारे हो और जनता ने तुम्हें वोट नहीं दि्ये हैं। अपने नेता के कहने पर मुकर रहे हैं। उस समय आपकी मांग यही थी कि ये घुसपैठिए यहां कैसे आए हैं, इस बात की जांच कर्वाइए।...(व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : इस पर बहस होनी चाहिए। हमने बहस की मांग की थी।

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : चित भी मेरी और पट भी मेरी।

(c3/1510/hng-pb)

अध्यक्ष महोद्य, डिप्लोमेसी की दृटि से हमें जो वि्ज्य प्राप्त हुई, उसमें बस-यात्रा एक बहुत बड़ा कारण बनी। दुनि्या यह समझा कि भारत मित्रता चाहता है, लेकिन पाकि्स्तान पीठ में छूरा घोंप रहा है। मैं एक बात शहीदों के बारे में कहना चाहता हूं। वैसे युद्ध तो सन् 1947, 1962, 1965 और 1971 में हुए और जहां हमको जरूरत नहीं थी, वहां हमने अपनी सेनाऐं भेजी। श्रीलंका में अपनी सेनाओं को भेजकर अपने देश के लोगों को मर्वा्या। मैं मर्वा्या शब्द का प्रयोग कर रहा हूं, यह इसलिए कि युद्ध अपने देश की भूमि पर नहीं हुआ और जो शहीद होते थे, उनकी अस्थि्यों का पुलिंदा बनाकर, कप्ड़ों के साथ उनके परि्वार के लोगों को दे दि्या जाता था। लेकिन इस बार हमारे जवानों ने अपनी जानें जोखिम में डालकर, फील्ड में जाकर शहीदों की लाश को लेकर आए, उनके परि्वार वालों को दीं और पूरे राजकी्य सम्मान के साथ उनको अंतिम संस्कार कि्या ग्या। यह पहली बार हुआ है। इसके साथ ही अग्स्त 1993 तक शहीद के परि्वार वालों को एक पैसा नहीं दि्या जाता था, लेकिन उसके बाद एक लाख रुप्या एक्स-ग्रेशि्या के रूप में राशि दी जाने लगी। इसके पहले कुछ भी नहीं दि्या जाता था। ...(व्यवधान)

श्री चन्द्रभाण सिंह (फरूखाबाद) : क्या आपको यह मालूम है, उस समय कौन डिफैंस मिनि्स्टर थे ? उन्होंने कहा कि दस लाख दि्या जाये और लाश वहां भेजी जाए। क्या इस बात की जानकारी आपको है ? उस समय कौन से डिफैंस मिनि्स्टर ने यह संशोधन कर्वा्या था ?

श्री मदनलाल खुराना (दिल्ली सदर) : क्या आप थे ?

श्री चन्द्रभाण सिंह (फरूखाबाद) : उस समय मुला्यम सिंह जी थे।

श्री मदनलाल खुराना (दिल्ली सदर) : उस समय फिर यह राशि दी क्यों नही गई ?

श्री चन्द्रभाण सिंह (फरूखाबाद) : लड़ाई तो आपने की। पिछली सारी लड़ाइयों में लोग इतने नहीं मरे, जितने कि इस लड़ाई में मरे।

श्री हरिपाल सिंह साथी (हरिद्वार) : मुलायम सिंह जी ने तो दो सौ करोड़ रुपए देने की बात कही थी।

श्री चन्द्रभाण सिंह (फरूखाबाद) : आप मित्रता करने जा रहे थे, 200 करोड़ रुपए दे देते, तो उसमें क्या हर्ज था।

श्री मदनलाल खुराना (दिल्ली सदर) : महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि शहीदों को यह सब देकर हम उनके ऊपर कोई एहसान नहीं करते हैं, बल्कि हम उनके मनोबल को ऊपर उठाने की कोशिश करते हैं। नागालैंड की हमारी एक बहन जिसके पति को परमवीर प्राप्त है, वह बर्तन मांझ कर अपने घर का गुजारा कर रही थी, यह सब टीवी पर दिखाया गया। जब कोई जवान शहीद हो, तो उसको लगे कि उसके बाद देशवासी उसके परिवार की चिन्ता करने के लिए हैं। यह इसके पीछ उद्देश्य था। मैं यह कहना चाहता हूं कि करिगल विजय की ये सब उपलब्धिया हैं, लेकिन दूसरी तरफ बंगलादेश की विजय पर इंदिरागांधी को भारतरत्न दिया गया ...(व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : वाजपेयी जी ने ही उनको दुर्गा कहा था।

श्री मदनलाल खुराना (दिल्ली सदर) : महोदय, उनका बड़प्पन देखिए। उस समय जब यह बात कही गई थी, तो उन्होंने कहा था कि हमारे मतभेद कुछ भी हो सकते हैं, लेकिन युद्ध में देश का एक नेता होता है और वह होता है, प्रधानमंत्री और आप हमारी सब की नेता हैं। इसलिए उन्होंने तारीफ की, लेकिन आपका क्या रोल था, वह मैं सदन को बताना चाहता हूं। जब अटल जी के समय में लड़ाई हो रही थी, तो कहा गया - लड़ाई से पहले यह बतायें कि वे घुसपैठिए आए कैसे, इसकी जांच करें। उस समय राट्र के हित में आपके नेताओं ने ये ब्यान दिए, मैसेज दिए, जिसका यह परिणाम हुआ।

(d3/1515/krr/har)

SHRI SHYAMACHARAN SHUKLA (MAHASAMUND): Sir, you cannot compare the Kargil conflicts with regular big wars, which were fought with Pakistan two or three times. There can be no comparison. It can be only a mere conflagration in a very limited area. Do not compare the two.

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : सभापति महोदय, आप किसी भी क्षेत्र में हमारी उपलब्धियां देखें तो हमारी सरकार पूरी तरह से उस कसौटी पर खरी उतरी है। मैं पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के संबंध में कहना चाहता हूं। रसोई गैस के मार्च 2000 तक 75 लाख कनैक्शन देने का हमने निर्णय किया है। हमने 31 जनवरी 2000 तक 65 लाख कनैक्शन दे दिये हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की तीन कंपनियों ने इन तीन महीनों में 25 लाख गैस कनैक्शन दिये हैं।

इस समय देश में 70 प्रतिशत पेट्रोलियम की मांग आयात द्वारा पूरी की जाती है। इस देश के अंदर से पेट्रोलियम पदार्थों को निकाला जाये। इसके लिए पहली बार हुआ है कि 25 अन्वेाण कार्यों के लिए स्वीकृति दी गयी है। इनमें से 7 डीप वाटर ऑफ शैड ब्लॉक, 16 सैल्फ वाटर ऑफ शैड ब्लॉक तथा दो अनलैंड ब्लॉक - इस तरह से ये कार्य दिये गये हैं। प्रदूाण को कम करने के उपाय किये गये हैं।

अध्यक्ष जी, पिछले बीस सालों में पंजाब, जम्मू-कश्मीर और उत्तर-पूर्वी राज्यों में आतंकवादी गतिविधियां बहुत तेज हुई हैं। जब हम अपोजीशन में थे तब भी कहते थे और आज भी कहते हैं कि इस समस्या को हमसे पहले केवल लॉ एंड आर्डर की समस्या के रूप में देखा गया। जम्मू-कश्मीर की समस्या के बारे में हमने पहले भी कहा था कि यह लॉ एंड आर्डर की समस्या नहीं है। यह तो इन्सर्जेंसी है, देश के विभाजन की चाल है, यह एक प्रॉक्सी वार है। इस दृटि से इसको देखकर इस समस्या से निपटने की तैयारी कीजिए। हम कहते थे कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश में लॉ एंड आर्डर की समस्या हो सकती है लेकिन यह तो प्रॉक्सी वार है। लेकिन पहले इस दृटि से किसी ने इसे देखा नहीं। इसलिए कश्मीर में 1980 से लेकर 1997 तक वहां क्या हुआ? मेरा अपना एक दृटिकोण शांति के बारे में यह है कि वहां कितने पर्यटक जाते हैं। आपको पता होगा कि 1990 से पहले 10 लाख के करीब पर्यटक काश्मीर में आते थे। लेकिन 1990 से 1997 तक केवल तीन अंकों में पर्यटक वहां आये। अब इस साल वहां दो लाख से अधिक पर्यटक गये हैं। उम्मीद है कि डेढ़ लाख इन गर्मियों में आयेंगे। वहां नये होटल अब खुल रहे हैं, लोग वहां शूटिंग करने जा रहे हैं। जो कश्मीर पिछले 10 सालों में वीरान था आज वहां सामान्य परिस्थिति हो रही है, शांति आ रही है। सन 1995 में वहां केवल 322 पर्यटक आये थे लेकिन इस साल 21 अगस्त 1999 तक एक लाख बहत्तर हजार आये हैं। हमने 1998 में कश्मीर के आतंकवाद पर पूर्ण नियंत्रण करने के लिए तीन साल तक के लिए एक एक्शन प्लॉन बनाया। उसके लिए 192.53 करोड़ रुपये खर्च करने का प्रावधान किया गया। दिसम्बर 1998 के अंदर दो आईआर बटालियनें स्थापित की गयीं। जिनके लिए 25 करोड़ रुपया जम्मू-कश्मीर की सरकार देगी। जम्मू-कश्मीर पुलिस का आधुनिकीकरण करने के लिए पांच करोड़ रुपया दिया गया।

(e3/1520/skb-san)

इसके अलावा स्पेशल पुलिस आफिसर्स 1.11.99 से जम्मू कश्मीर में गठन किया गया । भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में रक्षा समितियो के गठन के लिये प्रतिर्वा 20 करोड़ रुपया दिया ताकि उसमें लोगो की भागीदारी हो और उन समितियो को हथियार दिया जायें। सीमा सुरक्षा बल द्वारा जब्त किये गये 6500 एस.एल.आर., 3500 ए.के.47 जम्मू कश्मीर पुलिस को दिये गये । इसी तरह से पूर्वोत्तर राज्यों के लिये किया गया। जैसा कि आप जानते हैं कि सड़क के बिना यातायात नहीं हो सकता. इसके लिये रेल मार्ग भी चाहिये. अभी रेल बजट में इस बात का जिक्र किया गया था। प्रधानमंत्री जी ने पहली बार सड़क विकास के लिये राट्रीय राजमार्ग परियोजना की घोाणा की और इस परियोजना की अनुमानित धनराशि 54 जार करोड़ रुपये है जो पिछले बजट में पैट्रोल और डीजल पर एक रुपया प्रति लीटर में उपकर लगाकर पूरा किये जाने की घोाणा की गई थी। इसका एक बड़ा हिस्सा राट्रीय राजमार्ग और ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों के लिये खर्च किया गया ।

सभापति महोदय, मै अंत में कांग्रेस के मित्रों को एक राय देना चाहता हूं कि वे यह मन में तय कर लें कि जैसा जनता ने कहा है कि पांच साल तक वहां रहिये और बीच में गड़बड़ मत करिये क्योकि जैसे पिछली बार आपने किया और यह सही भी है कि जैसे मछली बिना पानी के ही रह सकती , वैसे ही कांग्रेसी लोग बिना शासन के नहीं रह सकते। अगर कहीं बीच में गड़बड़ की तो 141 से 112 रह गये और फिर डबल डिजिट पर आ जायेंगे। आप अपोज़ीशन के नाते रचनात्मक सहयोग दीजिये। सरकार के कामों में कमियां हैं, जो गलतियां हैं, उन्हें बताइये..

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल (कानपुर): आप चेयर को संबोधित करें । आप सरकार की बड़ाई करें लेकिन हमे शिक्षा मत दीजिये। आप सरकार के काम में चार चांद लगाईये।

श्री मदन लाल खुराना: मैं तो आपको सुझाव दे रहा हूं। अभी हाल ही में सम्पन्न हुये चुनावों में नेशनल डैमोक्रेटिक अलाइंस को मिली भारी विजय ने सिद्ध कर दिया है कि श्री वाजपेयी जी के नेतृत्व में केन्द्रीय सरकार ठीक से काम कर रही है क्योंकि सरकार की नीयत ठीक है और नीतियां सही हैं और इच्छा शक्ति भी है। 21 वी शताब्दी में भारत को ले जायें, यही हमारा सपना है। उचित होगा कि भारत 21वीं शताब्दी में ऐसे वर्ा में प्रवेश करे जिसमें अपनी प्रतिज्ञा को नये संकल्प के साथ

वास्तविक रूप में परिणित करें। इसके लिये एक ही मूल मंत्र है जो यथार्थ में साकार हो सकता है, वह विकास का मंत्र है, तेजी से विकास का मंत्र, सम्यक् विकास, जीवन के हर पहलू का विकास। इसके लिये सरकार और लोगो की मानसिकता बदलने की जरूरत है। अब समय आ गया है कि सरकार राजनैतिक दलों, गैर सरकारी संगठनों तथा नागरिकों के बीच में नये प्रकार की सहकारी भागदारी स्थापित हो ताकि भारत के विकास का नया अध्याय लिखा जाये। सरकार इस प्रयास में अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन ईमानदारी से करने के लिये वचनबद्ध है। यह शताब्दी भारत की शताब्दी बने, इसके लिये हम सब मिलकर दृढ़-विश्वास के साथ आगे बढ़ें, यह कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

धन्यवाद।

(इति)

1525 hours

DR. NITISH SENGUPTA (CONTAI): Mr. Chairman, Sir, I rise to second the Motion of Thanks so ably presented by my colleague, Shri Madan Lal Khurana. I thank the President for giving an excellent Address, which is a diagnosis of all the ills that have taken place in the last half-a-century in our country, and also a prognosis of what needs to be done to set things right. This Address is an excellent signpost into the future, and I strongly second Shri Khurana""s Motion.

Sir, the President has commented on the record legislative business done in the previous Session. We should specially note that to prove that this is a Government that works. We must give some credit to the principal Opposition Party for rising over narrow party considerations in larger national interests. Well, that is some kind of a consolation prize for them. But that is in sharp contrast to the kind of behaviour they showed in the last ten days on a very minor, trivial issue which could be sorted elsewhere, not certainly on the floor of the House.

Sir, I do not want to take much time at this stage. There are barely two or three minutes left. So, I will resume my speech next time. But basically I want to say that the President""s Address tells us about the need for a change in the mindset. That is the most important thing.

We have entered into this new millennium with the largest number of illiterates, largest number of poor people, largest number of villages without any drinking water and all because our politicians, most of us, try to give importance to other areas, which are important no doubt but not overwhelmingly important.

I think, our entire economic history in the last two or three decades has been full of distortions. We are producing gold at a cost of something like Rs. 11,500 per gram to sell to rich people at Rs. 4,500 per gram, whereas we are not able to provide literacy to our villagers with the same money which is given as subsidy to these people, to many of these public sector enterprises or inefficient enterprises. There is no choice really between public sector and private sector. The real choice is between inefficient industry and efficient industry. There are many examples of efficient industrial units in the public sector, just as inefficient industrial units are there in the private sector.

I, therefore, propose that we definitely go ahead. The President has spoken a lot about fiscal deficit. Why has fiscal deficit occurred? I take this occasion to say that managing the nation""s economy is not really something different from managing our family economy. In our family budget, we try to adjust the expenditure within the incomes available. When a nation cannot do that, in the long run, there can only be peril as happened in 1990 and as was likely to happen, but luckily our economy today has acquired a momentum of its own where it is able to go ahead independent of the dispensation of the policy by the bureaucrats and Ministers in the Government. That is why, in the 70s, we were finding it difficult to have an industrial growth rate of even one per cent or two per cent, but in the 80s, with a little bit of liberalisation that was attempted, it rose to 5.6 per cent or 5.5 per cent in the last three or four years. In spite of the fact that there was so much political uncertainty, economy grew at a ver rapid pace.

Sir, I take this opportunity, therefore, to say that let us not talk about public sector, private sector, deregulation, regulation and so on and so forth. These are all Nineteenth Century levels, which do not suit the reality of the Twentieth Century. In the Twentieth Century, we must be accustomed to changing the mindset and must subject both the public sector and the private sector to the discipline of the balance sheet and the profit and loss statement.

Sir, I stop at this stage.

MR. CHAIRMAN (SHRI P.H. PANDIYAN): Now, it is 3.30 p.m. You can continue next time.

DR. NITISH SENGUPTA (CONTAI): I shall resume next time. Thank you very much.

(g3/1530/snb)

ANNOUNCEMENT RE: AMENDMENTS TO THE MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS

MR. CHAIRMAN (SHRI P.H.PANDIYAN): As per established practice, amendments to the Motion of Thanks on the

President's Address are to be moved after the proposer of the Motion and the Seconder of the Motion have concluded their speeches. As the speech of the seconder is not yet over, the Members would also be allowed to move their amendments, if not already done, during the next part of the Session on conclusion of the speech of the seconder.

MOTION RE: REPORTS OF THE COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

SHRI NIKHILANANDA SAR (BURDWAN): Sir, I beg to move:

> "That this House do agree with the First to Third Reports of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 1st, 8th and 15th March, 2000 respectively, subject to the modification that para 4 and part (ii) of para 5 of the First Report, relating to allocation of time to Resolution, be omitted."

MR. CHAIRMAN: The question is:

> "That this House do agree with the First to Third Reports of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 1st, 8th and 15th March, 2000 respectively, subject to the modification that para 4 and part (ii) of para 5 of the First Report, relating to allocation of time to Resolution, be omitted."

The motion was adopted.

.....